नितनेम

Nitnem

in Devanagari

****

ततकरा

(List of Contents)

१) --- जपुजी साहिब ------------------------- २
२) --- शबद हज़ारे--------------------------- १८
३) --- जापु साहिब -------------------------- २३
४) --- त्व प्रसादि सव्ये॥ स्रावग सुध समूह---------- ४१
४) --- त्व प्रसादि सव्ये॥ दीनन की प्रतिपाल -------- ४३
४) --- त्व प्रसादि चौपई॥ परणवो आदि एकंकारा ---- ४५
५) --- अनंदु साहिब ------------------------- ४७
६) --- रहरासि साहिब ------------------------ ५७
कबियो बाच बेनती॥चौपई॥पातिशाही १०॥ ----६३
अनंद साहिब (छोटा) ---------------------६६
७) --- अरदास ---------------------------- ६९
८)--- सोहिला ----------------------------- ७१
९) --- बारह माहा माझ महला ५---------------- ७४

जपुजी साहिब

१ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥
सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

गावै को साजि करे तनु खेह ॥
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥

सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मन्ने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥

मन्नै सगल भवण की सुधि ॥
मन्नै मुहि चोटा ना खाइ ॥
मन्नै जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

मन्नै मारगि ठाक न पाइ ॥
मन्नै पति सिउ परगटु जाइ ॥
मन्नै मगु न चलै पंथु ॥
मन्नै धर्म सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥
मन्नै परवारै साधारु ॥
मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥
मन्नै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच प्रधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥

संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥
अगम्म अगम्म असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥

विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥

ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥
ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सर्ब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
नानक सचे की साची कार ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धर्म साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धर्म खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ कर्म भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥

केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥
सर्म खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

कर्म खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥

जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भाँडा भाउ अम्मृतु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

शबद हजारे

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥
बिलप करे चातृक की निआई ॥
तृखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥
रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥
धन्नु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥
हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥रहाउ ॥
इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥
हुणि कदि मिलीऐ पृअ तुधु भगवंता ॥
मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥रहाउ
॥भागु होआ गुरि संतु
मिलाइआ ॥
प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ
॥१॥८॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥
दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥

साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥
अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥
सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥
दइआल तेरै नामि तरा ॥
सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥
तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहाँ ॥
दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥ रहाउ ॥
सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥
नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥४॥
साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु ३
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥
हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥
लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥

तिलंग मः १ ॥
इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥
आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥
सहु नेड़ै धन कम्मलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥
भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥
इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥
करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥
विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥
लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥

इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥
जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥
जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥
जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥
एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥
आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥
आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥
ऐसे रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥
सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १ ॥
कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥
कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥
तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सर्ब समाणा ॥१॥
रहाउ ॥
मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥
घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥
आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥
आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥
अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥
ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥९॥

 ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
 अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
 रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥
तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥
जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥
तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥
जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥
जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥
तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥

किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥
जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥
एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

बिलावलु महला १ ॥
मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥
मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥
कउणु जाणै पीर पराई ॥
हम नाही चिंत पराई ॥१॥ रहाउ ॥
अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥
सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥
तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥
जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥
जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥

जापु साहिब

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

स्री वाहिगुरू जी की फतह ॥

जापु

स्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥
अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहि्जै ॥
कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै ॥
तृभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन तृण कहत ॥
त्व सर्ब नाम कथै कवन कर्म नाम बरनत सुमत॥१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं कृपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥
नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए ॥ नमसतं अजाए ॥३॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे ॥४॥
नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥
नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥
नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥
नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥

नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥
नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं उदारे ॥ नमसतं अपारे ॥८॥
नमसतं सु एकै ॥ नमसतं अनेकै ॥
नमसतं अभूते ॥ नमसतं अजूपे ॥६॥
नमसतं नृकरमे ॥ नमसतं नृभरमे ॥
नमसतं नृदेसे ॥ नमसतं नृभेसे ॥१०॥
नमसतं नृनामे ॥ नमसतं नृकामे ॥
नमसतं नृधाते ॥ नमसतं नृघाते ॥११॥
नमसतं नृधूते ॥ नमसतं अभूते ॥
नमसतं अलोके ॥ नमसतं असोके ॥१२॥
नमसतं नृतापे ॥ नमसतं अथापे ॥
नमसतं तृमाने ॥ नमसतं निधाने ॥१३॥
नमसतं अगाहे ॥ नमसतं अबाहे ॥
नमसतं तृबरगे ॥ नमसतं असरगे ॥१४॥
नमसतं प्रभोगे ॥ नमसतं सुजोगे ॥
नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥१५॥
नमसतं अगम्मे ॥ नमसतसतु रम्मे ॥
नमसतं जलासरे ॥ नमसतं निरासरे ॥१६॥
नमसतं अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥
नमसतं अमजबे ॥ नमसतसतु अजबे ॥१७॥
अदेसं अदेसे ॥ नमसतं अभेसे ॥
नमसतं नृधामे ॥ नमसतं नृबामे ॥१८॥
नमो सर्ब काले ॥ नमो सर्ब दिआले ॥
नमो सर्ब रूपे ॥ नमो सर्ब भूपे ॥१६॥
नमो सर्ब खापे ॥ नमो सर्ब थापे ॥

नमो सर्ब काले ॥ नमो सर्ब पाले ॥२०॥
नमसतसतु देवै ॥ नमसतं अभेवै ॥
नमसतं अजनमे ॥ नमसतं सुबनमे ॥२१॥
नमो सर्ब गउने ॥ नमो सर्ब भउने ॥
नमो सर्ब रंगे ॥ नमो सर्ब भंगे ॥२२॥
नमो काल काले ॥ नमसतसतु दिआले ॥
नमसतं अबरने ॥ नमसतं अमरने ॥२३॥
नमसतं जरारं ॥ नमसतं कृतारं ॥
नमो सर्ब धंधे ॥ नमो सत अबंधे ॥२४॥
नमसतं नृसाके ॥ नमसतं नृबाके ॥
नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥२५॥
नमसतं अनंते ॥ नमसतं महंते ॥
नमसतसतु रागे ॥ नमसतं सुहागे ॥२६॥
नमो सर्ब सोखं ॥ नमो सर्ब पोखं ॥
नमो सर्ब करता ॥ नमो सर्ब हरता ॥२७॥
नमो जोग जोगे ॥ नमो भोग भोगे ॥
नमो सर्ब दिआले ॥ नमो सर्ब पाले ॥२८॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू हैं ॥ अभू हैं ॥२९॥
अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥ अनाम हैं ॥ अकाम हैं ॥३०॥

अधे हैं ॥ अभे हैं ॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥३१॥

तृमान हैं ॥ निधान हैं ॥ तृबरग हैं ॥ असरग हैं ॥३२॥

अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥ अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥३३॥

अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥ अभूत हैं ॥ अभरन हैं ॥३४॥

अगंज हैं ॥ अभंज हैं ॥ अझूझ हैं॥ अझंझ हैं ॥३५॥
अ्मीक हैं ॥ रफ़ीक हैं ॥ अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥३६॥
नृबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥ अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥३७॥
अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनंत हैं ॥ महंत हैं ॥३८॥
अलीक हैं ॥ नृसरीक हैं ॥ नृलम्भ हैं ॥ असम्भ हैं ॥३९॥
अगम्म हैं ॥ अजम्म हैं ॥ अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥४०॥
अलोक हैं ॥ असोक हैं ॥ अकर्म हैं ॥ अभरम हैं ॥४१॥
अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं ॥ अगाह हैं ॥४२॥
अमान हैं ॥ निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥४३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सर्ब माने ॥ समसती निधाने ॥
नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥
नमो काल काले ॥ नमो सर्ब पाले ॥
नमो सर्ब गउणे ॥ नमो सर्ब भउणे ॥४५॥
अनंगी अनाथे ॥ नृसंगी प्रमाथे ॥
नमो भान भाने ॥ नमो मान माने ॥४६॥
नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥
नमो गीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥४७॥
नमो नृत नृते ॥ नमो नाद नादे ॥
नमो पान पाने ॥ नमो बाद बादे ॥४८॥
अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥४९॥
कलंकं बिना ने कलंकी सरूपे ॥
नमो राज राजेस्वरं पर्म रूपे ॥५०॥
नमो जोग जोगेस्वरं पर्म सि्धे ॥
नमो राज राजेस्वरं पर्म बृधे ॥५१॥

नमो ससत्रपाणे ॥ नमो असत्र माणे ॥
नमो पर्म गिआता ॥ नमो लोक माता ॥५२॥
अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते ॥
नमो जोग जोगेस्वरं पर्म जुगते ॥५३॥
नमो न्ति नाराइणे क्रूर करमे ॥
नमो प्रेत अप्रेत देवे सुधरमे ॥५४॥
नमो रोग हरता नमो राग रूपे ॥
नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥५५॥
नमो दान दाने नमो मान मानं ॥
नमो रोग रोगे नमसतं इसनानं ॥५६॥
नमो मंत्र मंत्रं नमो जंत्र जंत्रं ॥
नमो इसट इसटे नमो तंत्र तंत्रं ॥५७॥
सदा स्चिदानंद सरबं प्रणासी ॥
अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥५८॥
सदा सिधदा बुधदा बृध करता ॥
अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ॥५९॥
पर्म पर्म परमेस्वरं प्रोछ पालं॥
सदा सरबदा स्धि दाता दिआलं ॥६०॥
अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥
समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥
जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥ ॥६२॥
प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥६३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥
अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे ॥

नमो सर्ब माने ॥ समसती निधाने ॥६४॥
नमसत्वं नृनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥
नमसत्वं अगंजे ॥ नमसत्वं अभंजे ॥६५॥
नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥
नमो सर्ब देसे ॥ नमो सर्ब भेसे ॥६६॥
नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥
नमो शाह शाहे ॥ नमो माह माहे ॥६७॥
नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥
नमो रोख रोखे ॥ नमो सोख सोखे ॥६८॥
नमो सर्ब रोगे ॥ नमो सर्ब भोगे ॥
नमो सर्ब जीतं ॥ नमो सर्ब भीतं ॥६९॥
नमो सर्ब गिआनं ॥ नमो पर्म तानं ॥
नमो सर्ब मंत्रं ॥ नमो सर्ब जंत्रं ॥७०॥
नमो सर्ब दूसं ॥ नमो सर्ब कूसं ॥
नमो सर्ब रंगे ॥ तृभंगी अनंगे ॥७१॥
नमो जीव जीवं ॥ नमो बीज बीजे ॥
अखि्जे अभि्जे ॥ समसतं प्रसि्जे ॥७२॥
कृपालं सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी ॥
सदा सरबदा रिधि सिधं निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अमृत करमे ॥ अम्बृत धरमे ॥
अख्ल जोगे ॥ अच्ल भोगे ॥७४॥
अच्ल राजे ॥ अट्ल साजे ॥
अख्ल धरमं ॥ अल्ख करमं ॥७५॥
सरबं दाता ॥ सरबं गिआता ॥
सरबं भाने ॥ सरबं माने ॥७६॥

सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥
सरबं भुगता ॥ सरबं जुगता ॥७७॥
सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥
सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
आदि रूप अनादि मूरति अजोनि पुरख अपार ॥
सर्ब मान तृमान देव अभेव आदि उदार ॥
सर्ब पालक सर्ब घालक सर्ब को पुनि काल ॥
ज्त्र त्त्र बिराजही अवधूत रूप रिसाल ॥७९॥
नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥
आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥
देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग ॥
ज्त्र त्त्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥८०॥
नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥
सर्ब मान सर्ब्त्र मान सदैव मानत ताहि ॥
एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥
खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिरि एक ॥८१॥
देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब ॥
रूप रंग न जाति पाति सु जानई किंह जेब ॥
तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन ॥
च्क्र ब्क्र फिरै चतुर च्क मानही पुर तीन ॥८२॥
लोक चउदह के बिखै जग जापही जिंह जाप ॥
आदि देव अनादि मूरति थापिओ सबै जिंह थाप ॥
पर्म रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार ॥
सर्ब बिस्व रचिओ सुयम्भव गड़न भंजनहार ॥८३॥
काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥

धर्म धाम सु भर्म रहित अभूत अलख अभेस ॥
अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥
गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम ॥८४॥
आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥
गरब गंजन सर्ब भंजन आदि रूप असूत ॥
अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥
सर्ब लाइक सर्ब घाइक सर्ब को प्रतिपार ॥८५॥
सर्ब गंता सर्ब हंता सर्ब ते अनभेख ॥
सर्ब सासत्र न जानही जिंह रूप रंगु अरु रेख ॥
पर्म बेद पुराण जाकहि नेत भाखत न्ति ॥
कोटि सिम्मृत पुरान सासत्र न आवई वहु च्ति ॥८६॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥
आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥८७॥
अनभउ प्रकास ॥ निसदिन अनास ॥
आजानु बाहु ॥ साहान साहु ॥८८॥
राजान राज ॥ भानान भान ॥
देवान देव ॥ उपमा महान ॥८९॥
इंद्रान इंद्र ॥ बालान बाल ॥
रंकान रंक ॥ कालान काल ॥९०॥
अनभूत अंग ॥ आभा अभंग ॥
गति मिति अपार ॥ गुन गन उदार ॥९१॥
मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥
अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति अखंड ॥९२॥
आलिस्य कर्म ॥ आदृस्य धर्म ॥
सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥९३॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
गोबिंदे॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे ॥९४॥
हरीअं ॥ करीअं ॥ नृनामे ॥ अकामे ॥९५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥
च्त्र च्क्र करता ॥ च्त्र च्क्र हरता ॥
च्त्र च्क्र दाने ॥ च्त्र च्क्र जाने ॥९६॥
च्त्र च्क्र वरती ॥ च्त्र च्क्र भरती ॥
च्त्र च्क्र पाले ॥ च्त्र च्क्र काले ॥९७॥
च्त्र च्क्र पासे ॥ च्त्र च्क्र वासे ॥
च्त्र च्क्र मानयै ॥ च्त्र च्क्र दानयै ॥९८॥

चाचरी छंद ॥
न स्त्रै ॥ न म्त्रै ॥ न भरमं ॥ न भ्त्रै ॥९९॥
न करमं ॥ न काए ॥ अजनमं ॥ अजाए ॥१००॥
न च्त्रै ॥ न म्त्रै ॥ परे हैं ॥ पव्त्रै ॥१०१॥
पृथीसै ॥ अदीसै ॥ अदृसै ॥ अकृसै ॥१०२॥

भगवती छंद ॥ त्व परस्रादि कथते ॥
कि आछ्जि देसै ॥ कि आभ्जि भेसै ॥
कि आगंज करमै ॥ कि आभंज भरमै ॥१०३॥
कि आभिज लोकै ॥ कि आदित सोकै ॥
कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूत करनै ॥१०४॥
कि राजं प्रभा हैं ॥ कि धरमं ध्रुजा हैं॥
कि आसोक बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥१०५॥
कि जगतं कृती हैं ॥ कि छत्रं छत्री हैं ॥

कि ब्रहमं सरूपै ॥ कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥
कि आदि अदेव हैं ॥ कि आपि अभेव हैं ॥
कि चि्त्रं बिहीनै ॥ कि एकै अधीनै ॥१०७॥
कि रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥ कि ग़ैबुल ग़ैब हैं ॥१०८॥
कि अफ़वुल गुनाह हैं ॥ कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी दिहंद हैं ॥१०९॥
कि राज़क रहीम हैं ॥ कि करमं करीम हैं ॥
कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली हैं ॥११०॥
कि सर्ब्त्र मानियै ॥ कि सर्ब्त्र दानियै ॥
कि सर्ब्त्र गउनै ॥ कि सर्ब्त्र भउनै ॥१११॥
कि सर्ब्त्र देसै ॥ कि सर्ब्त्र भेसै ॥
कि सर्ब्त्र राजै ॥ कि सर्ब्त्र साजै ॥११२॥
कि सर्ब्त्र दीनै ॥ कि सर्ब्त्र लीनै ॥
कि सर्ब्त्र जाहो ॥ कि सर्ब्त्र भाहो ॥११३॥
कि सर्ब्त्र देसै ॥ कि सर्ब्त्र भेसै ॥
कि सर्ब्त्र कालै ॥ कि सर्ब्त्र पालै ॥११४॥
कि सर्ब्त्र हंता ॥ कि सर्ब्त्र गंता ॥
कि सर्ब्त्र भेखी ॥ कि सर्ब्त्र पेखी ॥११५॥
कि सर्ब्त्र काजै ॥ कि सर्ब्त्र राजै ॥
कि सर्ब्त्र सोखै ॥ कि सर्ब्त्र पोखै ॥११६॥
कि सर्ब्त्र त्राणै ॥ कि सर्ब्त्र प्राणै ॥
कि सर्ब्त्र देसै ॥ कि सर्ब्त्र भेसै ॥११७॥
कि सर्ब्त्र मानियैं ॥ सदैवं प्रधानियैं ॥
कि सर्ब्त्र जापियै ॥ कि सर्ब्त्र थापियै ॥११८॥
कि सर्ब्त्र भानै ॥ कि सर्ब्त्र मानै ॥
कि सर्ब्त्र इंद्रै ॥ कि सर्ब्त्र चंद्रै ॥११९॥

कि सरबं कलीमै ॥ कि परमं फ़हीमै ॥
कि आकिल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥१२०॥
कि हुसनल वजू हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥
हमेसुल सलामैं ॥ सलीखत मुदामैं ॥१२१॥
ग़नीमुल शिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥
बिलंदुल मकानैं ॥ ज़मीनुल ज़मानैं ॥१२२॥
तमीज़ुल तमामैं ॥ रुजूअल निधानैं ॥
हरीफुल अजीमैं ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥१२३॥
अनेकुल तरंग हैं ॥ अभेद हैं अभंग हैं ॥
अज़ीज़ुल निवाज़ हैं ॥ ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥१२४॥
निरुकत सरूप हैं ॥ तृमुकति बिभूत हैं ॥
प्रभुगति प्रभा हैं ॥ सुजुगति सुधा हैं ॥१२५॥
सदैवं सरूप हैं ॥ अभेदी अनूप हैं ॥
समसतो पराज हैं ॥ सदा सर्ब साज हैं ॥१२६॥
समसतुल सलाम हैं ॥ सदैवल अकाम हैं ॥
नृबाध सरूप हैं ॥ अगाध हैं अनूप हैं ॥१२७॥
ओअं आदि रूपे ॥ अनादि सरूपै ॥
अनंगी अनामे ॥ तृभंगी तृकामे ॥१२८॥
तृबरगं तृबाधे ॥ अगंजे अगाधे ॥
सुभं सर्ब भागे ॥ सु सरबा अनुरागे॥१२९॥
तृभुगत सरूप हैं ॥ अछि्ज हैं अछूत हैं ॥
कि नरकं प्रणास हैं ॥ पृथीउल प्रवास हैं ॥१३०॥
निरुकति प्रभा हैं ॥ सदैवं सदा हैं ॥
बिभुगति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥१३१॥
निरुकति सदा हैं ॥ बिभुगति प्रभा हैं ॥
अनउकति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥१३२॥

चाचरी छंद ॥

अभंग हैं ॥ अनंग हैं ॥
अभेख हैं ॥ अलेख हैं ॥१३३॥
अभरम हैं ॥ अकर्म हैं ॥
अनादि हैं ॥ जुगादि हैं ॥१३४॥
अजै हैं ॥ अबै हैं ॥
अभूत हैं ॥ अधूत हैं ॥१३५॥
अनास हैं ॥ उदास हैं ॥
अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥१३६॥
अभगत हैं ॥ बिरकत हैं ॥
अनास हैं ॥ प्रकास हैं ॥१३७॥
निचिंत हैं ॥ सुनिंत हैं ॥
अलि्ख हैं ॥ अदि्ख हैं ॥१३८॥
अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥
अढाह हैं ॥ अगाह हैं ॥१३९॥
असम्भ हैं ॥ अगम्भ हैं ॥
अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥१४०॥
अनि्त हैं ॥ सुनि्त हैं ॥
अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥१४१॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥
सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥१४२॥
सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥
सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥१४३॥
सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥
सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥१४४॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥
अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥१४५॥
प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सर्ब साथे ॥
अगाध सरूपे ॥ नृबाध बिभूते ॥१४६॥
अनंगी अनामे ॥ तृभंगी तृकामे ॥
नृभंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥१४७॥
न पोत्रै न पुत्रै ॥ न स्त्रै न मित्रै ॥
न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥१४८॥
नृसाकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥
सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा हैं ॥१४९॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
कि ज़ाहर ज़हूर हैं ॥ कि हाज़र हज़ूर हैं ॥
हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल कलाम हैं ॥१५०॥
कि साहिब दिमाग़ हैं ॥ कि हुसनल चराग़ हैं ॥
कि कामल करीम हैं ॥ कि राज़क रहीम हैं ॥१५१॥
कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥ कि राज़क रहिंद हैं ॥
करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनल जमाल हैं ॥१५२॥
ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥ ग़रीबुल निवाज़ हैं ॥
हरीफुल शिकन्न हैं ॥ हिरासुल फिकन्न हैं ॥१५३॥
कलंकं प्रणास हैं ॥ समसतुल निवास हैं ॥
अगंजुल गनीम हैं ॥ रजाइक रहीम हैं ॥१५४॥
समसतुल ज़ुबाँ हैं ॥ कि साहिब किराँ हैं ॥
कि नरकं प्रणास हैं ॥ बहिसतुल निवास हैं ॥१५५॥
कि सरबुल गवन्न हैं ॥ हमेसुल रवन्न हैं ॥
तमामुल तमीज हैं ॥ समसतुल अजीज हैं ॥१५६॥

परं पर्म ईस हैं ॥ समसतुल अदीस हैं ॥
अदेसुल अलेख हैं ॥ हमेसुल अभेख हैं ॥१५७॥
ज़मीनुल ज़मा हैं ॥ अमीकुल इमा हैं ॥
करीमुल कमाल हैं ॥ कि जुरअति जमाल हैं ॥१५८॥
कि अचलं प्रकास हैं ॥ कि अमितो सुबास हैं ॥
कि अजब सरूप हैं ॥ कि अमितो बिभूत हैं ॥१५९॥
कि अमितो पसा हैं ॥ कि आतम प्रभा हैं ॥
कि अचलं अनंग हैं ॥ कि अमितो अभंग हैं ॥१६०॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
मुनि मनि प्रनाम ॥ गुनि गन मुदाम ॥
अरि बर अगंज ॥ हरि नर प्रभंज ॥१६१॥
अन गन प्रनाम ॥ मुनि मनि सलाम ॥
हरि नर अखंड ॥ बर नर अमंड ॥१६२॥
अनभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास ॥
गुनि गन प्रनाम ॥ जल थल मुदाम ॥१६३॥
अनछि्ज अंग ॥ आसन अभंग ॥
उपमा अपार ॥ गति मिति उदार ॥१६४॥
जल थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥
जल थल महंत ॥ दिस विस बिअंत ॥१६५॥
अनभव अनास ॥ ध्रितधर धुरास ॥
आजान बाहु ॥ एकै सदाहु ॥१६६॥
ओअंकार आदि ॥ कथनी अनादि ॥
खल खंड खिआल ॥ गुर बर अकाल ॥१६७॥
घर घरि प्रनाम ॥ चित चरन नाम ॥
अनछि्ज गात ॥ आजिज न बात ॥१६८॥
अनझंझ गात ॥ अनरंज बात ॥

अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥१६६॥
आडीठ धर्म ॥ अति ढीठ कर्म ॥
अणब्रण अनंत ॥ दाता महंत ॥१७०॥

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥
खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥१७१॥
जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥
कलि कारण हैं ॥ सर्ब उबारण हैं ॥१७२॥
ध्रित के ध्रण हैं ॥ जग के क्रण हैं ॥
मन मानिय हैं ॥ जग जानिय हैं ॥१७३॥
सरबं भर हैं ॥ सरबं कर हैं ॥
सर्ब पासिय हैं ॥ सर्ब नासिय हैं ॥१७४॥
करुणाकर हैं ॥ बिस्वम्भर हैं ॥
सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥१७५॥
ब्रहमंडस हैं ॥ खल खंडस हैं ॥
पर ते पर हैं ॥ करुणाकर हैं ॥१७६॥
अजपाजप हैं ॥ अथपाथप हैं ॥
अकृता कृत हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥१७७॥
अमृता मृत हैं ॥ करणा कृत हैं ॥
अकृता कृत हैं ॥ धरणी ध्रित हैं ॥१७८॥
अमृतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥
अकृता कृत हैं ॥ अमृता मृत हैं ॥१७९॥
अजबा कृत हैं ॥ अमृता अमृत हैं ॥
नर नाइक हैं ॥ खल घाइक हैं ॥१८०॥
बिस्वम्भर हैं ॥ करुणालय हैं ॥
नृप नाइक हैं ॥ सर्ब पाइक हैं ॥१८१॥

भव भंजन हैं ॥ अरि गंजन हैं ॥
रिपु तापन हैं ॥ जपु जापन हैं ॥१८२॥
अकलं कृत हैं ॥ सरबा कृत हैं ॥
करता कर हैं ॥ हरता हरि हैं ॥१८३॥
परमातम हैं ॥ सरबातम हैं ॥
आतम बस हैं ॥ जस के जस हैं ॥१८४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥
नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे ॥
नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥
नमो राजसं तामसं साँत रूपे ॥
नमो पर्म त्तं अत्तं सरूपे ॥
नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥
नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने ॥१८६॥
नमो जुध जुधे नमो गिआन गिआने ॥
नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥
नमो कलह करता नमो साँत रूपे ॥
नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥
कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥
नमो आस आसे नमो बाँक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
तृभंगी तृकाले अनंगी अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छंद ॥
अजै ॥ अलै ॥

अभै ॥ अबै ॥१८९॥
अभू ॥ अजू ॥
अनास ॥ अकास ॥१९०॥
अगंज ॥ अभंज ॥
अल्ख ॥ अभ्ख ॥१९१॥
अकाल ॥ दिआल ॥
अलेख ॥ अभेख ॥१९२॥
अनाम ॥ अकाम ॥
अगाह ॥ अढाह ॥१९३॥
अनाथे ॥ प्रमाथे ॥
अजोनी ॥ अमोनी ॥१९४॥
न रागे ॥ न रंगे ॥
न रूपे ॥ न रेखे ॥१९५॥
अकरमं ॥ अभरमं ॥
अगंजे ॥ अलेखे ॥१९६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥
नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥
अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥
नृकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥
कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१९७॥
सदा स्चिदानंद स्त्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥
अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥
हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१९८॥
च्त्र च्क्र वरती च्त्र च्क्र भुगते ॥
सुयम्भव सुभं सरबदा सर्ब जुगते ॥

दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥
सदा अंगसंगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतह॥
पातिशाही १०॥

त्व प्रसादि सव्ये

स्रावग सुध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥
सूर सुरारदन सुध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥
सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रानपती के ॥
स्री भगवान की भाइ कृपा हू ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥

माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥
कोटि तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ॥
एते भए तु कहा भए भूपति अंत को नाँगे ही पाँइ पधारे ॥२॥

जीत फिरे_सभ देस दिसान को बाजत ढोल मृदंग नगारे ॥
गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत ही हयराज हजारे ॥
भूत भव्खि भवान के भूपत कउनु गनै नहीं जात बिचारे ॥
स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे ॥३॥

तीर्थ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥
बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै ॥
पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजार क देखै ॥
स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥४॥

सुध सिपाह दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ॥
भारी गुमान भरे मन मैं कर पर्बत पंख हले न हलैंगे ॥
तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलैंगे ॥

स्री पति स्री भगवान कृपा बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे ॥५॥

बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछ्या ॥
तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मल्या ॥
गाड़्हे गड़्हान के तोड़न हार सु बातन हीं चक चार लव्या ॥
साहिब स्री सभ को सिरनाइक जाचक अनेक सु एक दिव्या ॥६॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥
पुन्न प्रतापन बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥
साध समूह प्रसन्न फिरैं जग स्त्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन तृलोक को राज करैंगे ॥
कोटि इशनान गजादिक दान अनेक सुअम्बर साज बरैंगे ॥
ब्रह्म महेसर बिसन सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ॥
जे नर स्रीपति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रोहओ बक धिआन लगाइओ ॥
नश्रात फिरिओ लीए सात समुंद्रनि लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बासु कीओ बिखिआन सों बैठ कै ऐसे ही ऐस सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९॥

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंगु गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ मृतान को पूजन धाइओ ॥
कूर कृआ उरझिओ सभही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥

त्व प्रसादि सव्ये

दीनन की प्रतिपाल करै नित संत उबार गनीमन गारै ॥
प्छ पसू नग नाग नराधप सर्ब समै सभ को प्रतिपारै ॥
पोखत है जल मै थल मै पल मै कलि के नहीं कर्म बिचारै ॥
दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है परु देत न हारै ॥१॥

दाहत है दुख दोखन कौ दल दुजन के पल मै दलि डारै ॥
खंड अखंड प्रचंड प्रहारन पूरन प्रेम की प्रीति सभारै ॥
पार न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥
रोज ही राज बिलोकत राजिक रोख रूहान की रोजी न टारै ॥२॥

कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भव्खि भवान बनाए ॥
देव अदेव खपे अहम्मेव न भेव लखिओ भ्रम सिओ भरमाए ॥
बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिओ किन स्री पदमापति पाए ॥३॥

आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत भव्खि भवान अभै है ॥
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र अछै है ॥
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ॥
दीनद इआल दइआ कर स्री पति सुंदर स्री पदमापति एहै॥४॥

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दैहै ॥
काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर स्री पदमापति लैहै ॥५॥

रोगन ते अरु सोगन ते जल जोगन ते बहु भाँति बचावै ॥

सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तनि एक न लागन पावै ॥
राखत है अपनो कर दै कर पाप सम्बूह न भेटन पावै ॥
और की बात कहा कहो तो सौ सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥६॥

ज्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ॥
भूमि अकास पताल रसातल ज्छ भुजंग सभै सिर निआवै ॥
पाइ सकै नही पार प्रभाहू को नेत ही नेतह बेद बतावै ॥
खोज थके सभ ही खुजीआसुर हार परे हरि हाथि न आवै ॥७॥

नारद से चतुरानन से रुमनारिख से सभ हूं मिलि गाइओ ॥
बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हार परे हरि हाथ न आइओ ॥
पाइ सकै नही पार उमापति सि्ध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥
धिआन धरो तिह के मन मैं जिह को अमितोजि सभै जग छाइओ ॥८॥

बेद पुरान कतेब कुरान अभेद नृपान सभै पचिहारे ॥
भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ॥
राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संगि तिहारे ॥
आदि अनादि अगाधि अभेख अद्वैख जपिओ तिनही कुल तारे ॥९॥

तीर्थ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ॥
देस फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे ॥
आसन कोट करे असटाँग धरे बहु निआस करे मुख कारे ॥
दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ॥१०॥

त्व प्रसादि ॥ चौपई ॥

प्रणवो आदि एकंकारा ॥ जल थल महीअल कीओ पसारा ॥
आदि पुरख अबिगत अबिनासी ॥ लोक चत्रदस जोति प्रकासी ॥१॥

हसत कीट के बीच समाना ॥ राव रंक जिह इक सर जाना ॥
अद्वै अलख पुरख अबिगामी ॥ सभ घट घट के अंतरजामी ॥२॥

अलख रूप अछै अनभेखा ॥ राग रंग जिह रूप न रेखा ॥
बरन चिहन सभहूं ते निआरा ॥ आदि पुरख अद्वै अबिकारा ॥३॥

बरन चिहन जिंह जाति न पाता ॥ स्त्र मि्त्र जिंह तात न माता ॥
सभ ते दूरि सभन ते नेरा ॥ जल थल महीअलि जाहि बसेरा ॥४॥

अनहद रूप अनाहद बानी ॥ चरन सरन जिह बसत भवानी ॥
ब्रह्मा बिसन अंतु नही पाइओ ॥ नेत नेत मुख चार बताइओ ॥५॥

कोटि इंद्र उपइंद्र बनाए ॥ ब्रह्मा रुद्र उपाइ खपाए ॥
लोक च्त्र दस खेल रचाइओ ॥ बहुरि आप ही बीच मिलाइओ ॥६॥

दानव देव फनिंद्र अपारा ॥ गंध्रब जछ रचे सुभचारा ॥
भूत भविख भवान कहानी ॥ घट घट के पट पट की जानी ॥७॥

तात मात जिह जात न पाता ॥ एक रंग काहू नही राता ॥
सर्ब जोति के बीच समाना ॥ सभहूं सर्ब ठौर पहिचाना ॥८॥

काल रहत अनकाल सरूपा ॥ अलख पुरख अबिगत अवधूता ॥
जात पात जिह चिहन न बरना ॥ अबिगत देव अछै अनभरमा ॥६॥

सभ को काल सभन को करता ॥ रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित जिह इक छिन धिआइओ ॥ काल फास के बीच न आइओ
॥१०॥

अनंदु साहिब

रामकली महला ३ अनंदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही कृपा करि बनवारीआ ॥
एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥
गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥

करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मन्न मेरिआ ॥
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥
कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥
एहु कुटम्बु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥
साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥
ऐसा कम्मु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥
कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥
कहै नानकु तू सदा अगम्मु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥

सुरि नर मुनि जन अम्मृतु खोजदे सु अम्मृतु गुर ते पाइआ ॥
पाइआ अम्मृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥

जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥
लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥
कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अम्मृतु गुर ते पाइआ ॥१३॥

भगता की चाल निराली ॥
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥
जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥
करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥
जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥
कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥

एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥
कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
पवितु माता पिता कुटम्ब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥
कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥

कहै नानकु से पवितु जिनी
गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे कर्म कमाए ॥
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥
मन्नु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥

जीअहु मैले बाहरहु निर्मल ॥
बाहरहु निर्मल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥
एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥
वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥
कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे
तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥

जीअहु निर्मल बाहरहु निर्मल ॥
बाहरहु त निर्मल जीअहु निर्मल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥
कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥
जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥
कहै नानकु जिन मन्नु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥
होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥
गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥
आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥

जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥
पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥
अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥
पीवहु अम्मृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥
कहदे कचे सुणदे कचे कचंी आखि वखाणी ॥
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥

गुर का सबदु रतन्नु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
सबदु रतनु जितु मन्नु लागा एहु होआ समाउ ॥
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥
आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥

सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥

हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥
गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥

सिमृति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अमृत
बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै
जागत रैणि विहाणी ॥२७॥

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु
किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥
ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥
आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥
लिव छुड़की लगी तृसना माइआ अमरु वरताइआ ॥
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी
तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥

मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥
जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥
हरि आपि अमुलकु है
भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥
पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥
एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥
कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी
ता तू जग महि आइआ ॥
हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥
कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग
महि आइआ ॥३३॥

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥

हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ॥
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥
कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै
किआ तुधु कर्म कमाइआ ॥
कि कर्म कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु
कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी
आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है
हरि बिनु अवरु न कोई ॥
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से
सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसटि होई ॥३६॥

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥
सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥
कहै नानकु अमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु

साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥

हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए
दसवा गुपतु रखाइआ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ
गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥
सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥
इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रह्मु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

सो दरु रागु आसा महला १
सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सर्ब समाले ॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥
गावनि तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥
गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥
गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥
गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥
गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥
गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥
गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥
सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥
आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥
केवडु वडा डीठा होइ ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥
वडे मेरे साहिबा गहिर गम्भीरा गुणी गहीरा ॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥
आखण वाला किआ वेचारा ॥
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥

आखि थके कीमति नही पाई ॥
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥
देदा रहै न चूकै भोगु ॥
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥
ना को होआ ना को होइ ॥३॥
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥

रागु गूजरी महला ४ ॥
हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥
हम कीरे किर्म सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई
हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥
हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥
हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि
मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥
जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥
जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई
तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥
धनु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ
मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥

राग़ु गूजरी महला ५ ॥
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि पर्म पदु
पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥
सिरि सिरि रिजकु सम्बाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥
ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥
तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥
सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ
॥४॥५॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥
तूं घट घट अंतरि सर्ब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥
तूं पारब्रह्मु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥
से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी

तिन तूटी जम की फासी ॥
जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ॥
जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥
से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइआ जी
जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी
तपु तापहि जपहि बेअंता ॥
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमृति सासत जी
करि किरिआ खटु कर्म करंता ॥
से भगत से भगत भले जन नानक जी
जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥
तूं आदि पुरखु अपरम्परु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥
तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥

आसा महला ४ ॥
तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥
जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥

तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥
ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥
प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥

जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥
कहु नानक हम नीच करम्मा ॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

पाः १० कबियोबाच बेनती ॥ चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै र्छा ॥ पूरन होइ चि्त की इ्छा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥

हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥ आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परिवारा ॥ सेवक सि्ख सभै करतारा ॥२॥

मो र्छा निजु कर दै करियै ॥ सभ बैरिन कौ आज संघरियै ॥
पूरन होइ हमारी आसा ॥ तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥

तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ॥ जो बर चाहों सु तुम ते पाऊं ॥
सेवक सि्ख हमारे तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥४॥

आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥ मरन काल का त्रास निवरियै ॥
हूजो सदा हमारे प्छा ॥ स्री असिधुज जू करियहु र्छा ॥५॥

राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब संत सहाइ पियारे ॥
दीन बंधु दुसटन के हंता ॥ तुमहो पुरी चतुर दस कंता ॥६॥

काल पाइ ब्रह्मा बपु धरा ॥ काल पाइ सिवजू अवतरा ॥
काल पाइ करि बिसनु प्रकासा ॥ सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥

जवन काल जोगी सिव कीओ ॥ बेद राज ब्रह्मा जू थीओ ॥
जवन काल सभ लोक सवारा ॥ नमस्कार है ताहि हमारा ॥८॥

जवन काल सभ जगत बनायो ॥ देव दैत ज्छन उपजायो ॥
आदि अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरू समझियहु हमारा ॥९॥

नमस्कार तिस ही को हमारी ॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥
सिवकन को सिवगुन सुख दीयो ॥ स्त्रुन को पल मो बध कीयो ॥१०॥

घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥
चीटी ते कुंचर असथूला ॥ सभ पर कृपा दृसटि करि फूला ॥११॥

संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधन के सुखी ॥
एक एक की पीर पछानैं ॥ घट घट के पट पट की जानैं ॥१२॥

जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥
जब आकरख करत हो कबहूं ॥ तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥

जेते बदन सृसटि सभ धारै ॥ आपु आपनी बूझ उचारै ॥
तुम सभही ते रहत निरालम ॥जानत बेद भेद अर आलम ॥१४॥

निरंकार नृबिकार निरलम्भ ॥ आदि अनील अनादि असम्भ ॥
ता का मूड़ह उचारत भेदा ॥ जाकौ भेव न पावत बेदा ॥१५॥

ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥ महाँ मूड़ह कछु भेद न जानत ॥
महादेव कौ कहत सदा सिव ॥ निरंकार का चीनत नहि भिव ॥१६॥

आपु आपुनी बुधि है जेती ॥ बरनत भिन्न भिन्न तुहि तेती ॥

तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥१७॥

एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रंक भयो राव कही भूपा ॥
अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ॥१८॥

कहूं फूलि राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भ्यो संकर इकैठा ॥
सगरी सृसटि दिखाइ अचम्भव ॥ आदि जुगादि सरूप सुयम्भव ॥१९॥

अब र्छा मेरी तुम करो ॥ सि्ख उबारि असि्ख संघरो ॥
दुशट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रण घाता ॥२०॥

जे असिधुज तव सरनी परे ॥ तिन के दुशट दुखित ह्वै मरे ॥
पुरख जवन पग परे तिहारे ॥ तिनके तुम संकट सभ टारे ॥२१॥

जो कलि को इक बार धिऐ है ॥ ताके काल निकटि नहि ऐहै ॥
र्छा होइ ताहि सभ काला ॥ दुशट अरिसट टरें ततकाला ॥२२॥

कृपा दृसटि तन जाहि निहरिहो ॥ ता के ताप तनक मो हरिहो ॥
रि्धि सि्धि घर मो सभ होई ॥ दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ॥२३॥

एक बार जिन तुमै सम्भारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥
जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥

खड़ग केत मै सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥
सर्ब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥

स्वैया ॥

पाँइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आँख तरे नहीं आन्यो ॥
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥

सिम्मृत सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥
स्री असिपान कृपा तुमरी करि मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ॥

दोहरा ॥
सगल दुआर कउ छाडिकै गहिओ तुहारो दुआर ॥
बाँहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

रामकली महला ३ अनंदु
सतिगुर प्रसादि ॥
अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तू मन्न मेरे दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
कहै नानकु मन्न मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥

साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रह्मु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

मुंदावणी महला ५ ॥
थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अमृत नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रह्म पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥
तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥
नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

अरदास

ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥
स्री भगौती जी सहाइ ॥
वार स्री भगौती जी की पातशाही १०॥

पृथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥
फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ॥
अरजन हरिगोबिंद नो सिमरौ स्री हरिराइ ॥
स्री हरिकिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥
तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ ॥
सभ थाईं होइ सहाइ ॥

दसवाँ पातशाह स्री गुरू गोबिंद सिंघ साहिब जी सभ थाईं होइ सहाइ ॥ दसाँ पातशाहीआँ दी जोत स्री गुरू ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरू ॥

पंजा पिआरिआँ, चौहाँ साहिबज़ादिआँ, चाल्हीआँ मुकतिआँ, हठीआँ, जपीआँ, तपीआँ, जिनश्राँ नाम ज्पिआ, वंड छकिआ, देग चलाई, तेग वाही, देख के अणड्ठि कीता, तिनश्राँ पिआरिआँ, सचिआरिआँ दी कमाई दा धिआन धर के, खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरू ॥

जिनश्राँ सिंघाँ सिंघणीआँ ने धर्म हेत सीस दिते, बंद बंद कटाए, खोपरीआँ लुहाईआँ, चरखड़ीआँ ते चड़हे, आरिआँ नाल चिराए गए, गुरदुआरिआँ दी सेवा लई कुरबानीआँ कीतीआँ, धर्म नहीं हारिआ, सि्खी केसाँ सुआसाँ नाल निबाही, तिनश्राँ दी कमाई दा धिआन धर के, ख़ालसा जी, बोलो जी वाहिगुरू ॥

पंजाँ तख़ताँ, सर्ब्त गुरदुआरिआँ दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरू ॥ पृथमे सर्ब्त खालसा जी की अरदास है जी, सर्ब्त खालसा जी को

वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवे, चित आवन का सदका सर्ब सुख होवे ॥ जहाँ जहाँ खालसा जी साहिब, तहाँ तहाँ रछिआ रिआइत, देग तेग फतह, बिरद की पैज, पंथ की जीत, स्री साहिब जी सहाइ, खालसे जी के बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरू ॥

सि्खाँ नूं सि्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानाँ सिर दान नाम दान, स्री अम्मृतसर जी दे इशनान, चौंकीआँ, झंडे, बुंगे जुगो जुग अट्ल, धर्म का जैकार, बोलो जी वाहिगुरू ॥

सि्खाँ दा मन नीवाँ म्त उळची, म्त दा राखा अकाल पुरख वाहिगुरू ॥ हे अकाल पुरख दीन दिआल, करन कारन, पतित पावन क्रपा निधान जी, आपणे पंथ दे सदा सहाई दातार जीओ ॥ स्री ननकाणा साहिब ते होर गुरदुआरिआँ गुरधामाँ दे जिनश्राँ तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है, खुल्हे दरशन दीदार ते सेवा सम्भाल दा दान, ख़ालसा जी नूं बख़शो ॥

हे निमाणिआ दे माण निताणिआ दे ताण, निओटिआँ दी ओट, सचे पिता, वाहिगुरू, आप दे हज़ूर...........................दी अरदास है जी ॥ अखर दा वाधा घाटा भुल चुक माफ़ करनी जी ॥ सर्ब्त दे कारज रास करने ॥ सेई पिआरे मेल, जिनश्राँ मिलिआँ तेरा नाम चि्त आवे ॥ नानक नाम चड़हदी कला ॥ तेरे भाणे सर्ब्त दा भला ॥

वाहिगुरू जी का खालसा ॥
वाहिगुरू जी की फ़तहि ॥

सोहिला

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
सम्बति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

रागु आसा महला १ ॥
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥
बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥
सूरजु एको रुति अनेक ॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

रागु धनासरी महला १ ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥

धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु
सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनुो मोहि आही पिआसा ॥
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा
॥४॥३॥

राग गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥
करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥
साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५ ॥
करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रह्म गिआनी ॥
जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥
जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥
नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

बारह माहा

बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति कर्म के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तम्बोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिन्ना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥

हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निर्मल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिन्ना पासि ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥

करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥

प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ सम्म्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥

विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से तृपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥

कतिकि कर्म कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥
नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सर्म पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सर्ब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम कर्म मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीर्थ सगल पुन्न जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सर्ब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥

हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥
संसार सागर ते रखिअनु
बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सर्ब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
पारब्रह्मु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥